मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 68, सितम्बर(प्रथम), 2019

रक्षा बंधन

बदलते दौर में स्नेहपर्व रक्षाबंधन

डॉ० घनश्याम बादल

वक्त के साथ बदलाव का असर हर चीज पर होना स्वाभाविक है तो रक्षाबंधन भी इससे अछूता नहीं रहा है । समय के साथ रक्षबंधन के पर्व में भारी बदलाव देखने को मिले हैं । कभी सूत की डोरी से मनाया जाने वाला यह भानात्मक त्योहार आज सेलिब्रेशन का प्रतीक बनता जा रहा है । इसमें भी अर्थ ने जुड़कर इसके अर्थ बदल दिए हैं । आइए देखते हैं वक्त के साथ कैसे बदला है रक्षाबंधन ।

पुराने ज़माना का रक्षाबंधन:

पुराने ज़माने में एक सूत की डोरी से बांधने की परम्परा रही है । सुबह सवेरे ही कोई ब्राहमण आकर 'येन बद्धो बलि राजा' का मंत्रोचारण करते हुए पहले स्वयं राखी बांधता और फिर बहन भाई को एक सूत या रेशम की डोरी बांध कर मिठाई खिलाती अज़ेर भाई अपनी साम्थर्य के अनुसार णन या उपहार देता गरीबों में सिवैंया बांट दी जाती थी बस , ऐसे ही मन जाता था रक्षाबंधन ।

आज की राखी:

बेशक अब वह ज़माना नहीं रहा है जब बहन , भाई की कलाई पर महज एक धागा बांध कर ही अपनी रक्षा का वचन ले लेती थी और रक्षाबंधन का पर्व मन जाता था । बदलते जमाने के अनुसार ही राखी का मूल्य व स्वरूप भी बदल रहा है । आज बाजार में इतनी तरह की राखियां हैं कि लेटेस्ट व मनमाफिक चुनने की समस्या है । अब तो राखी का संबंध भी 'स्टेट्स' से जुड़ गया है । रक्षाबंधन से महीने भर पहले ही बाजार तरह तरह की एक से बढ़कर एक राखियों से सज जाते हैं । यें राखियां परम्परागत राखियों से लेकर लेटेस्ट व डिजाईनर तथा महंगी से महंगी राखियां हैं ।

डिजाईनर राखियों का युग:

आज डिजाइनर राखियों का ज़माना है । बड़ी -बड़ी कम्पनियों से लेकर गली- गली में बनने वाली गजेटस वाली यें राखियां रक्षाबंधन के पर्व पर काम में लाई जाती हैं । बहन भाई एक से बढ़कर एक कीमती राखियां बाधंकर रक्षाबंधन मनाते हैं। अगर भाई , बहन से उपयोगी व डिजाईनर राखी की उम्मीद रखता है तो बदले में बहन भी महंगे गजेट्स , ज्वेलरी , इलेक्टोनिक नोटबुक से लेकर लैपटाप, मोबाइल या ऐसे ही दूसारे तोहफों की उम्मीद ही नहीं

रखती वरन उनकी एडवांस में ही डिमांड तक रख रही हैं । हालांकि गरीब व निम्न मध्य वर्ग में सस्ती फाइबर की राखी उसी भाव के साथ बंधवाकर राखी का पर्व मन रहा है आज भी ।

पैसे बोलता है:

एक वक्त था जब बाजार में सूत या कि रेशम की राखियां ही मिला करती थी, गरीब लोग कच्चे सूत की डोरी बांध या बंधवा कर ही रक्षाबंधन मना लेते थे तो अमीर लोगों में रेशम की या जरी की बनी राखियां बंधवा कर राखी का त्यौहार सेलीब्रेट करते थे । राजे महाराजे , साहूकार आदि सोने चांदी के तारों से बनी , रत्नजड़ित, नगों वाली बेशकीमती राखियां प्रयोग में लाकर अपना स्टेटस दर्शाते थे । वक्त ने करवट बदली , न राजे महाराजे रहे और न ही उनकी शाही राखियां । पर समय के साथ जैसे जैसे पैसे का प्रभाव बढ़ रहा हैं वैसे वैसे ही राखियां भी बदल रही हैं।

मॉडर्न हो गई राखियां:

आज बाजार में इलेक्ट्रोनिक्स का जलवा राखियां भी दिखा रही हैं , मार्केट में इलेक्ट्रोनिक डिवाइस वाली राखियां सबसे ज्यादा आकर्षित कर रही हैं , म्यूजिकल राखियां बच्चों व बड़ों दोनो को लुभा रही हैं । लाइट बदलने वाली राखियां भी अच्छे भाव पा रही हैं । पैसे वाला वर्ग अपने बच्चों को राखियों के रूप में घड़ियां व सोने तथा चांदी की चेनें , ब्रेसलेट्स , फैंड्सशिप बैंड्स आदि दिलवा रहा है तो गरीबों की राखियां भी अब सूत की डोरी नहीं रह गयी हैं । वें भी सौ दो सौ रुपये की इलेक्ट्रोनिक घड़ियां अपने बच्चों को दिलवा कर ज्यादा खुश हैं और इसके पीछे धारणा ये है कि परम्परागत राखियां त्योहार के तुरंत बाद ही ''आउटडेटेड' व 'यूजलेस' हो जाती हैं जबकि यें राखियां लम्बे समय तक न केवल काम में आती हें वरन् अपने पैसे भी वसूल कर देती हैं ।

बढ़ रहा भौतिकतावाद:

तर्क की दृष्टि से देखें तो भौतिकता के इस युग में उपयोगितावाद को गलत नहीं कहा जा सकता है । आखिर मेहनत के कमाए पैसे घड़ी दो घड़ी में खराब कर फेंक देने में समझदारी भी कहां हैं । अब यह अलग बात हैं कि इन राखियों में प्यार कम और दिखावा ज्यादा है । कई बार तो दिखावे के चक्कर में उधार तक लेने की नौबत तक आ जाती है जिसे अच्छा नहीं कहा जा सकता है। आखिर भाई बहन का रिश्ता तो मूलतः भावना का ही है न! मोल भाव या कि दिखावे से इस पर विपरीत असर भी पड़ सकता है ।

भावना घटी, बढ़ा दिखावा:

रक्षाबंधन इसी सच्चे प्यार का प्रतीक है और सच्चे प्यार को बढ़ाये जाने की जरुरत है , पर सच्चा प्यार अब दिखाई भी कहां देता हैं । चारों तरफ पैसा प्यार पर हावी हो गया है। इस प्रवृत्ति का असर रक्षाबंधन पर भी साफ साफ दिखाई दे रहा है । बहनें भाई को मिठाई के

बजाय पिज्जा ,बर्गर ,या फिर मेवे का पैकेट थमा रही हैं , तो भाई भी उन्हे महंगे से महंगे तोहफे भेंट कर रहे हैं । आज के ज़माने में अच्छी सी एक राखी की कीमत एक हजार से लेकर एक लाख रुपये तक भी है । जब बहन की राखी की कीमत इतनी होगी तो स्वाभाविक रुप से भाई को भी वैसा या उससे भी महंगा उपहार देना ही पड़ेगा । इसी होड़ के चलते रक्षाबंधन भी आज भावनाओं का कम और दिखावे का पर्व ज्यादा बन रहा है।

कमजोर होती विश्वास की डोर:

अगर इस प्रवृत्ति पर समय रहते यदि अंकुष नहीं लगा तो रक्षाबंधन का पर्व महज़ दिखावे का ही पर्व न बन कर रह जाये, यह डर आज के दिन सता रहा है। एक डर और भी है वह है , रक्षाबंधन की आड़ में पनप रहे गलत सम्बंधों का जाल । जो आज एक नई चुनौती के रुप में सामने आ रहा है । बेशक़ सारे सम्बन्ध गलत नहीं होते । पर , यह भी सच है कि गलत मनोवृत्ति के बहुत से युवा एक दूसरे के साथ बहन भाई के रिश्ते के नाम पर जो शुरुआत करते हैं ,वह जाने अनजाने रुप में एक दूसरे ही सम्बन्ध में जब बदल जाती है तो इसका उल्टा संदेश मां , बाप , समाज और अन्य लोगों को भी जाता है और इससे अपसी विश्वास की डोर बहुत ही कमजोर पड़ने की आशंका बल पकड़ती है ।

लौटे मर्यादा का युग:

युवा पीढ़ी को चाहिये कि वह सम्बन्ध जोड़ने से पहले ये जरुर तय कर ले कि वह कौन सा सम्बन्ध आपस में जोड़ने जा रही है, क्योंकि सम्बन्धो की शुचिता न केवल उनमें एक विश्वास जगाएगी वरन् इससे एक अच्छा संदेश भी पूरे समाज को मिलेगा और एक बार फिर से हुमायुं व कर्मावती या फिर कृष्ण व द्रौपदी या राजा बलि द्वारा दिये गए रक्षा वचनो की मर्यादा लौटेगी ।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें